श्रीमद भागवत कथा मानस महाकाल का प्रथम दिवस

प्रभु प्रेमी संघ शिविर उज्जैन में आज दिनांक 12 मई से जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज के श्रीमुख से श्रीमद भागवत कथा का शुभारंभ निवृत्तमान शंकराचार्य पद्मभूषण परम पूज्य स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि जी महाराज , कार्ष्णिपीठाधीश्वर परम पूज्य स्वामी गुरुशरणानन्द जी महाराज ने किया। 18 मई तक चलने वाली कथा के प्रथम दिवस व्यासपीठ से पूज्य आचार्यश्री ने कहा काल यहाँ इसलिए सच है कि मुख में है काल व्याल मुख ग्रास, संसार निर्णास हेतवे स्वभावतः ईश्वर कृपालु है अनुग्रह उसका स्वभाव है उसकी प्रकृति में करुणा है जहाँ कृपालुता है अनुग्रह है करुणा है। अज्ञानता के कारण, प्रमाद के कारण सत्य को पहचान नहीं पाता जो स्वयं से विलग है तनिक सा विवेक चाहिए। सत्कर्मो की संलग्नता शुभ संकल्प बिना संत की कृपा से आप को नहीं मिल पायेंगे, सत्संग का यही फल है आपमें सत्कर्मो की जिज्ञासा हो, यदि आप में सत्कर्म का भान जगे इसका आशय यह है कि आपको सद्गुरु सन्निधि सद्विचार की प्राप्ति हुई है । प्रमाद का अर्थ है जो प्राप्त है उसका तिरस्कार उसके प्रति उदासीनता । जिस दिन आपको आपके प्रश्न दिखाई देने लगेंगे उस दिन आपको गुरु मिल जायेंगे गुरु व्यक्ति का नाम नहीं है, गुरु परंपरा का नाम है जिनका स्वयं पर नियंत्रण नहीं है वह परंपरा के अधीन नहीं है, मनुष्य को ईश्वर की तरफ से सबसे अनमोल उपहार है आज ! वर्तमान मिला है सृजन देव दुर्लभ कला है, यह कला तब सिद्ध होती है जब आप बिना प्रमाद करते है कल नहीं करना आज ही करना, एक ब्रह्म ही लक्ष्य हो।

सिंहस्थ में महाकाल वन में क्षिप्रा के तीरे आप बड़ा साधन करने जा रहे हो- श्रवण साधन! अप्रमत्ता आध्यात्मिक गलियारे का यह पहला गुण है आपके पास सुनने की कला होना चाहिए वेद कहता है सुनो पहले इसलिए कहा गया है भद्रं कर्नेभि श्रुणुयाम देवा, साधक का विशिष्ट गुण ही सुनना है श्रवण पहली साधना है। जो रूप आप देख रहे है उसमे विविधता, अनेकता है नानात्व है यह सभी एक है। विविधता में एकता ही कुंभ का फल है, कथा में साधन चतुष्ट्य सिद्ध हो जाता है, यह साधक के अंतःकरण को तैयार करती है। साधनों का कोई सार है सकल आध्यत्मिक कर्मो का फल अन्तः कर्ण की शुचिता उसका पावित्र्य है । पूज्यता का दंभ, हठ-जिद, अविचार-अविवेक कुछ विषयो के अभ्यस्त हो जाने के कारण दुःख है, अल्पता के कारण ही दुःख है जो स्वयं के पास नहीं है उसके बताने के कारण दुःख है । बने बनाये में से कैसे निकलना है उसे साधू से सीखना चाहिए । प्रसाद पूर्ण है, पवित्र है, उत्तम है, विश्व की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है प्रसाद। हम भारतवासी सौभाग्यशाली है जिन्हें पदार्थों को प्रसाद बनाना आता है । प्रसाद से अल्पता का भाव समाप्त हो जाता है । भगवान आनंद का स्वरुप है भगवान के नाम में माधुर्य है, भक्ति है। भगवान के नाम में भय से मुक्ति समाहित है खो जाने का डर सभी को सताता है जिसकी श्रद्धा और विश्वास जाग गए है वह भय मुक्त हो जाता है। जो अविश्वासी है उनमे भय सदा बना रहता

है। आहार शुद्धि से ही सतगुणों की वृद्धि संभव है प्रभु के नाम में असीम सामर्थ्य है। महाकाल वन गुरु शिष्यों के संबंधो का है। गुरुमंत्र के जाप से करोड़ो जन्मों के पाप ध्वंस हो जाते है, भवबंधन से मुक्त हो जाते है, साधू समष्टि में जीता है, परमार्थ में जीता है, जो संसार में रहता तो है परन्तु उसके भीतर संसार नहीं रहता। उत्थान सहज नहीं है पतन सहज है साधक का संकल्प पवित्र होना चाहिए।

कुंभ में सत्संग का फल धन तो नहीं है पर सत्संग करने से विषम परिस्थितियों में मन को तटस्थ रखने की शक्ति मिलती है प्रतिकूलताओं में कैसे जिया जाता है उसका सूत्र मिलता है । यह कथा परा विज्ञान है, आत्म विज्ञान है, कथा अभयता को प्रदान करती है, यहाँ हो रही कथा महाकाल की प्रसन्नता के लिए हैं महाकाल के तीन रूप है काल, कराल और कृपाल, काल कराल से मुक्त होकर कृपाल रूप का दर्शन हो इसलिए यह कथा है।

कुंभ में मौन, ध्यान, दान, स्नान, व्रत एवं प्रायश्चित के नियम ही सार्थक है। प्रायश्चित से आशय है भूल की पुनरावृत्ति न करना। अच्छी बातों का दान करना, आत्म अनुशासन में रहना, दूसरों की सेवा करना आपका ऐसा नियम इस कुंभ में हो । प्रणाम मन से किया जाता है सर्वश्रेष्ठ प्रणाम मनसा एवं उरसा है उरसा का आशय हृदय से। मन का प्रणाम करने से गुरु की सामर्थ्य आपके पास आ जाती है । सभी का सर्वथा मंगलमय हो ऐसी मंगल कामना के साथ मुकुंद माधव गोविन्द बोल के संकीर्तन के साथ आज की कथा विराम हुई।

कथा में प्रभु प्रेमी संघ शिविर की अधिशासी प्रभारी पूज्या महामण्डलेश्वर स्वामी नैसर्गिका गि रि जी, स्वामी नचिकेता गिरि जी, पद्म विभूषण सोनल मानसिंह जी, मध्य प्रदेश के गृहमंत्री बाबुलाल जी गौर, सिंहस्थ केन्द्रीय समिति के अध्यक्ष माखन सिंह जी, इंदौर महापौर श्रीमती मालिनी जी गौड़, भोपाल महापौर श्रीमती कृष्णा जी गौर, शिविर प्रमुख विनोद जी अग्रवाल उपस्थिति रही। कथा नियमित दोपहर 4:30 बजे से सायं 7 बजे तक होगी जिसका सीधा प्रसारण संस्कार चेनल पर भी देखा जा सकता है।

मीडिया सेल

प्रभु प्रेमी संघ कुंभ शिविर उज्जैन

उजरखेड़ा, भूखीमाता चौराहे के पास, बड़नगर रोड, उज्जैन